IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

थारू जनजाति : सामाजिक एवं आर्थिक जीवन

Dr.Rambha kumari

Academic Counselor(Sociology) ,IGNOU
and
Assistant professor, Department of Education, Karim City College,Jamshedpur,Jharkhand, India

Abstract

अनेकता में एकता ही भारतीय संस्कृति की पहचान है और इस अनेकता के मूल में निश्चित रूप से भारत के विभिन्न प्रदेशों में स्थित जनजातियां है ,जिनकी अपनी अलग-अलग सामाजिक स्थिति , आर्थिक स्थिति , संस्कृति,रीति - रिवाज और परंपराएं हैं।थारू जनजाति उत्तर भारत के तराई क्षेत्र,उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश और बिहार राज्य के पश्चिमी जिलों में निवास करती है।प्रस्तुत शोध आलेख थारू जनजाति: सामाजिक आर्थिक जीवन से संबंधित जानकारी उत्तराखंड के जनपद उधम सिंह नगर का तराई क्षेत्र से प्रश्नावली एवं साक्षात्कार के माध्यम से एकत्रित की गई है। इनमें अनेक उपजातियां भी पाई जाती है ।थारू जनजाति में एकल एवं संयुक्त दोनों प्रकार के परिवार व्यवस्था पाई जाती है एवं ये समूहों में उच्च और निम्न में बंटे होते हैं।गांव का एक मुखिया होता है एवं झगड़ा विवाद पंचायत द्वारा सुलझाई जाती है ।इनका मुख्य व्यवसाय कृषि है इनके अलावा यह पशुपालन,मछली पकड़ना,बांस की डलिया बनाने एवं मूज के बनी वस्तु एवं रस्सी बनाते है। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य थारु जनजाति की सामाजिक एवं आर्थिक जीवन का अध्ययन करना है ताकि थारू जनजाति के वर्तमान सामाजिक स्थिति को लोगों के सम्मुख प्रस्तुत किया जा सके। विदित हो कि थारु भारत की जनजातियों में एक प्रमुख जनजाति है यह कुमाऊं का सबसे बड़ा जनजातीय समूह है इसे 1967 ई. में जनजाति घोषित किया गया ।इसका विस्तार उत्तर भारत की तराई क्षेत्रों,उत्तराखंड के नैनीताल और उधम सिंह नगर से लेकर उत्तर प्रदेश के पीलीभीत,लखीमपुर,खीरी ,गोंडा बिहार राज्य के चंपारण जिला एवं नेपाल की तराई तक है। थारू जनजाति की सबसे अधिक जमाव नैनीताल जिले के बिलहरी परगना, खातीमाता तहसील की नानक माता ,बिलपुरी एवं जनकपुर बस्तियों के आसपास पाया जाता है।

Keywords

जनजाति, सामाजिक स्तर, आर्थिक स्तर ,उपजाति, निम्न, उच्च ,परिवार।

भारत की जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा आदिवासियों का है । वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार देश की कुल आबादी में आदिवासियों की संख्या 8.61% है जो लगभग देश के क्षेत्रफल का लगभग 15% भाग पर स्थित है। साधारणया हम किसी भी उस मानव समूह अथवा समुदाय को एक जनजाति कहते हैं जिसमें भौगोलिक पृथकता पाई जाती है, जिसका सामाजिक और आर्थिक जीवन बहुत पिछड़ा हुआ होता है तथा जिसकी एक पृथक संस्कृति तथा पृथक जीवन दर्शन होता है। इस दृष्टिकोण से जनजाति एक ऐसा समूह है जो किसी निर्जन अथवा पृथक प्रदेशों में जीवन व्यतीत करता है।

थारू भारत की जनजातियों में से एक प्रमुख जनजाति है। यह कुमाऊं का सबसे बड़ा जनजातीय समूह है। इसका विस्तार उत्तर भारत के तराई क्षेत्रों उत्तराखंड के नैनीताल और उधम सिंह नगर के से लेकर उत्तर प्रदेश के पीलीभीत लखीमपुर, खीरी,गोंडा, बहराइच, गोरखपुर,बलरामपुर,बिहार, सिद्धार्थनगर, महाराजगंज व बिहार राज्य के चंपारण जिला एवं नेपाल की तराई तक है। थारू जनजाति की सबसे अधिक जमाव नैनीताल जिले के बिलहारी परगना, खातीमाता, तहसील की नानक माता, बिल्पूरी एवं टाकनपुर बस्तियों के आसपास पाया जाता है।

यद्यपि अधिकतर थारू ग्राम- तराई क्षेत्र में ही स्थित है, लेकिन कुछ गांव पर्वतीय क्षेत्र एवं जंगल प्रदेशों से भी संबंधित है।थारूओ की इस संपूर्ण क्षेत्र को 'थारूहाट' नाम से जाना जाता है।इस क्षेत्र में वर्षा का आधिक्य होने के कारण यहां की भूमि दलदली है, इसलिए यहां घास एवं झाड़ियां बहुतायत मात्रा में पाई जाती है।यहां चीड़, वेत, मंजू आदि प्रचुर मात्रा में पाई जाती है। संपूर्ण दलदली थरुहट क्षेत्र 15,500 वर्ग मीटर क्षेत्र में विस्तृत है, जिसकी लंबाई लगभग 600 किलोमीटर व चौड़ाई लगभग 30 किलोमीटर है।

थारू हिमालय की तराई, नेपाल पूर्वी सीमा नदी मेथी से लेकर पश्चिमी सीमा नदी महाकाली तथा राप्ती उपत्यकर के मित्रि अधेश चित्तौन में थारूओ की घनी आबादी मिलती है। श्री प्रफुल्ल कुमार सिंह ने 14 प्रकार के थारूओ का उल्लेख किया है। मारंगिया, कोचिला, भटगामिया,राजधरिया,रोतार, खरहर,हलझरिया, मंझरिया, केवरि, राना, लभपूरियसा, चितोनीया, डगोरा तथा नवलपरिया। इसके अतिरिक्त थारूहाट जिला उधम सिंह नगर में गड़ारा, धंगरी तथा गुसाई थारू पाए जाते हैं। मातृका प्रसाद कोइराला ने खोट्टा थारू का उल्लेख किया है।

थारू जनजाति में अनेक उपजातियां भी पाई जाती है जो निम्न प्रकार है

1 **राणा**: ये स्वयं को राणा प्रताप के वंशज मानते हैं। ये थारूओ में सर्वोच्च थारू माने जाते हैं,तथा मुख्य रूप से खटीमा,सितारगंज में रहते हैं।

2 **डांगरिया**: डंग घाटी में रहने वाले थारू डंगरिया कहलाए जो नेपाल की तराई में मिलते हैं।

3 **जोगिया**: यह नेपाल की तराई में पाए जाते हैं।

4 **मछिमहा** : यह थारूओ में उच्च सामाजिक स्तर रखने वाला थारू है। यह गोरखपुर जनपद में नौतनवा में रहते हैं।

अलग-अलग तराई क्षेत्र में निवास करने वाले थारू जब किसी देश, राज्य या समुदाय की सीमा के पास होते हैं तो उनकी भाषा रहन-सहन में सम्मिश्रण पाया जाता है। तराई की भौगोलिक पर्यावरण के अनुसार उनके व्यक्तित्व तथा समाज का विकास हुआ है।थारू हम मानते हैं कि विश्व में भी अपने मूल निवास स्थान एवं पूर्वजों को भूल चुके हैं।

थारू जनजाति की उत्पत्ति

थारू जनजाति की उत्पत्ति के विषय में अनेक भ्रामक सिद्धांत एवं किवंदंतीयां प्रचलित है। 'थारू' का शाब्दिक अर्थ 'ठहरे' हैं अर्थात जो लोग तराई के वनों में आकर ठहर गए। कुछ के अनुसार तराई एक तर प्रदेश है अतः इसमें रहने वाले लोग 'तर' हो गए और यह

'तरहुआ' कहे जाने लगे। कुछ विद्वान कहते हैं कि जब राजपूत और मुस्लिम लोगों के बीच युद्ध हुआ तो यह लोग डर या थरथराते हुए आकर तराई क्षेत्रों में बस गए अत: इन्हें थथरना कहा गया।

एक मत अनुसार यह लोग बहुत शराब पीते थे इसलिए इन्हें मैदानी भाग के क्षेत्रीय लोगों ने थारू नाम दे दिया। कुछ विद्वान थार से आने के कारण थारू की उत्पत्ति मानते हैं। कुछ यह मानते हैं कि 'थारू' शब्द का अर्थ स्थानीय भाषा में 'जंगल' होता है इससे जंगल में रहने वाली जाति 'थारू' कहलाती है।

वंश परंपरा - अपने वंश परंपरा के बारे में थारूओ में मतभेद है। अधिकतम थारू का मानना है कि वे चित्तौड़गढ़ के राणा वंश से संबंधित है। मुगलों के आक्रमण से बचने के लिए 16 वीं शताब्दी में इन्होंने अपनी मातृभूमि छोड़ दी। पहला जत्था वाहर राजाओं का था जिन्होंने अपने को उत्तरी भारत के तराई क्षेत्र में छुपाया। जिस स्थान पर इन्हें आश्रय मिला वह गांव वाहरराणा गांव कहलाता है, यह गांव खटीमा से 12 मील दूर है।इसके पश्चात वे (राणा) पहाड़ी स्त्रियों के संपर्क में आए और जो संतान उत्पन्न हुई वह थारू है। कुछ विद्वान इस मत की पुष्टि करते हैं कि थारू राजस्थान के रहने वाले हैं। चित्तौड़ पर मुसलमान का आक्रमण होने पर चित्तौड़ की सैनिकों की स्त्रियां अपने-अपने नौकर चाकर संग तराई के सुरक्षित जंगलों में आ गई। कालान्तर में इन स्त्रियों का संबंध साथ के पुरुष वर्ग से जुड़ गया इससे जो संतान उत्पन्न हुआ थारू कहलाई इस प्रकार एक नई वंश परंपरा चल पड़ी।

श्री जी॰ के॰ अग्रवाल ने थारूओ की उत्पत्ति मंगोल और पहाड़ी जातियों के संपर्क में से माने हैं। जब नौवीं शताब्दी में राजपूतों द्वारा जब मंगोल भगाए गए तो उन्होंने अपने को तराई के जंगलों में छुपा लिया और फिर यहां के स्त्रियों के संपर्क से जो बच्चे उत्पन्न हुए वे थारू कहलाये। कुछ विद्वान इसकी उत्पत्ति किरात वंशों से मानते हैं।

अंतत तर्क के आधार पर केवल दो सिद्धांत को उचित हराया जाता है प्रथम अधिकतर थारू अपने आप को राणा वंश की उत्पत्ति मानते हैं। इनका विचार है कि मुगल शासन में मुगलों के अत्याचार से बचने के लिए राजपूताने से 12 राणा भाग कर इस क्षेत्र में आए और पहाड़ी स्त्रियों से धीरे-धीरे संबंध स्थापित होने पर विस्तृत रूप से फैल चुके हैं। दूसरा सिद्धांत यह मानता है की राजपूतानी स्त्रियां जौहर के असहनीय पीड़ा से बचने के कारण अपने थोड़े से सैनिकों के साथ जंगलों में छिपती हुई भागी और समय के साथ उन्हें सेवकों के साथ अपना घर बसा लिया। इस प्रकार से उत्पन्न संतान ही बाद में थारू कहलाई और यही कारण स्त्रियों को उच्च स्थिति की भी पुष्टि करता है।

थारूओं का सामाजिक जीवन

Social life of Tharus

थारू समाज परंपरावादी, रूढ़िवादी व अंधविश्वासों से घिरा हुआ है उनकी संस्कृति और सभ्यता बिल्कुल जनजातियों के समान तो नहीं कहीं जा सकती क्योंकि यह अधिक प्राचीन नहीं है ,लेकिन आदम समजो की कुछ विशेषताएं इसमें अवश्य पाई जाती हैं। ये स्वयं अपने को सिसोदिया बंशीय राजपूत कहते हैं। थारूओ के कुछ वंशगत उपाधियां है, जैसे राणा, कथरिया, चौधरी। थारूओ की शारीरिक लक्षण प्रजातिय मिश्रण के दोतक हैं।इनमें मंगोलीय तत्वों की प्रधानता होते हुए अन्य भारतीयों से साम्य के लक्षण पाए जाते हैं धर्म हिंदुओं की भांति सभी त्यौहार को मानते हैं।

धर्म : यह हिंदू धर्म मानते हैं तथा हिंदुओं की भांति सभी त्यौहार को मनाते हैं।ये देवी देवताओं का मूर्ति पूजा करते हैं। नारायण, शिव,एवं शक्ति की पूजा करते हैं।

थारूओ का त्यौहार

थारू मुख्यतः चार त्योहारों को धूमधाम से मनाते हैं। त्योहारों में सर्वप्रथम महत्व चढ़ाई को दिया जाता है जो वर्ष में दो बार चैत्र और वैशाख में मनाया जाता है।इस त्यौहार में स्त्रियां गांव के बाहर देवी की आराधना को केंद्रित करके मनाती हैं। तीजो को दूसरा स्थान

दिया गया है जो मुख्यतः सामान में मनाया जाता है ।मुंडन व होली भी इनके प्रमुख त्योहार हैं।होली के अवसर पर ये लोग एक नृत्य करते हैं। इस नृत्य को 'खिचड़ी' नृत्य कहा जाता है।यह उत्सव 8 दिनों तक अलग-अलग स्थान पर मनाया जाता है।इसमें स्त्री एवं पुरुष दोनों खिचड़ी नृत्य करते हैं यह रविवार तथा बृहस्पतिवार को शुभ दिन मानते हैं।थारू जनजाति दीपावली को अशुभ मानते हैं तथा इसे शोक पर्व कहते हैं। इन दिनो थारू अपने पूर्वजों को भेंट आदि प्रदान करते हैं जिनको 'रोटी' कहा जाता है।इसी कारण किसी प्रकार का आनंद मनाना इनकी रीतियों एवं परंपरा के विरुद्ध है।लेकिन अब थारू समाज दीपावली को शुभ पर्व मानने लगे हैं। अशिक्षा एवं पिछड़ेपन के कारण थारू जनजाति अंधविश्वास एवं टोने-टोटके में विश्वास करते हैं। बजहर त्यौहार वैशाख तथा ज्येष्ठ के महीने में मनाया जाता है। इनके इष्ट देव पछावन तथा खट्ग्य भूत हैं।

भाषा : थारू जनजाति की अपनी कोई विशेष भाषा नहीं होती है। ये अवधि, भोजपुरी, मैथिली, नेपाली, पहाड़ी यानी की मिश्रित भाषा बोलते हैं। ये भरोपिय भाषा परिवार के भारतीय -ईरानी समूह के अंतर्गत आने वाली भारतीयआर्य उप समूह की भाषा बोलते हैं।भाषा एवं संस्कृति की दृष्टि से नेपाल के थारूओ और राणा थरुओं में भिन्नता है।थारूहार के थारू एवं नेपाली थारूओ में भी भाषा एवं संस्कृति में भिन्नता पाई जाती है।

पहनावा एवं रहन-सहन

थारू जनजाति की स्त्रियों की वेशभूषा राजपूत रानियो के समान होती है। ये आभूषणों की शौकीन होती हैं। चांदी,तांबा, पीतल, कांसा तथा अन्य सोने के आभूषणों को यह पसंद करती हैं। बांकड़ा,खडुवा,हसुलिया, पहुंची,बाजूबंद,नकफुल बाली, मांगबिछी, कमर पेटी, कडुआ, सकरी एवं जंजीर प्रमुख है।अब मंगलसूत्र आदि विवाह में पहना जाता है। पुरुष भी छल्ला सकरी हसुलिया कनफुली, धुनिया आदि आभूषण पहनते हैं। स्त्रियां सर पर इडलीदार जुड़ा बाँधती हैं।ये घागरा रंगीन लहंगा एवं कुर्ता पहनती हैं, उनका लहंगा घुटनों तक होता है।वहीं पुरुषों की भी वेशभूषा राजपूत राणा राजा के समान ही होता है। ये पगड़ी धोती, कुर्ता या जैकेट पहनते हैं नेपाल के थारू कमीज न पहनकर फैट हुई फतुई (जैकेट) पहनते हैं। नेपाल के थारू फतुई पहनते हैं। फतुई में चांदी की अठन्नी,चवन्नी बटन के रूप में लगाते हैं। पुरुषों एवं महिलाओं में टैटू यानी कि अपने शरीर पर ईश्वर या अन्य चित्र गुदवाते हैं।थारु अधिकतर कच्ची मिट्टी की घरों में रहते हैं, हालांकि अब पक्के मकान भी बनने लगे हैं।ये मकान की दीवारों पर चित्रकारी करते हैं। खेतों के आसपास ही उनके घर होते हैं।

स्त्रियों की स्थिति

थारू समाज मातृसत्तात्मक समाज है यहां व्यावहारिक रूप से स्त्रियों को प्राथमिकता प्राप्त है। स्त्रियों की प्राथमिकता इस बात से स्पष्ट होती है कि पुरुषों को रसोई घर में घुसने का भी अधिकार नहीं होता है। पुरुष रसोई घर के बाहर बैठकर खाना खाते हैं और स्त्रियां अंदर। पर्व-त्यौहार में अधिकतर कार्य स्त्रियों द्वारा ही संपन्न किए जाते हैं।फसल की कटाई के बाद बेचे जाने का कार्य भी स्त्रियों के अधिकार में ही है।थारू समाज के सभी स्त्रियों को किसी भी क्षेत्र में कार्य करने के लिए पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त है।पुरुष उनके कार्य में सहायता करते हैं। स्त्रियों की संपत्ति पर विशेष अधिकार होता है।आभूषण उनकी व्यक्तिगत संपत्ति होती है। ये सुरक्षा अनुसार अपने पति को छोड़कर या तलाक देकर दूसरे पुरुष के साथ विवाह कर सकती हैं।अतः थारू जनजाति में पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों को विशेष अधिकार प्राप्त है जिससे उनके मातृ सत्तात्मक समाज होने की पुष्टि करता है।

परिवार तथा विवाह संगठन

थारू जनजाति में एकल एवं संयुक्त दोनों प्रकार की परिवार व्यवस्था पाई जाती है।टर्नर (1931) के मत से विगत थारू समाज में समाज दो और अर्धांश में बटा था जिसमें प्रत्येक के छः गोत्र होते थे। गोत्र को कुरी भी कहा जाता है। दोनों अर्धांश अंतरविवाही है। 'काज' और 'डोला' अर्थात वधूमूल्य और कन्यापहरण पद्धति से विवाह के स्थान पर अब थरुओ में भी संस्कारिक विवाह होने लगे हैं। विधवा द्वारा देवर से या अन्य अविवाहित पुरुषों से विवाह इनके समाज में मान्य है। अपने गोत्र में भी यह विवाह कर लेते हैं। थारू सगाई को 'दिखनौरी' तथा 'गौने' की रस्म को 'चाला' कहते हैं। पुरुषों का साले- सालियों से मधुर संबंध होता है। देवर-भाभी का स्वच्छंद व्यवहार भी उनके यहां स्वीकृत है। विधवा विवाह पर लठभरवा भोज आयोजित किया जाता है।इनमें बाल- विवाह की प्रथा पाई जाती है। इस कुप्रथा का चलन मुगल आतताइयों के कारण हुआ था।

विवाह हेतु चार रसमें निभाई जाती है। इनके द्वारा अपना-पराया,बात कटटी, विवाह और चाला।

1 **अपना पराया** : अपना-पराया रस्म एक प्रकार का सगाई रस्म है। इसमें लड़का लड़की दोनों पक्षों में कुछ सामग्रियों का लेन देन होता है।

2 **बात कट्टी :** बात कट्टी रस्म के अंतर्गत जब विवाह की तारीख मंजूर कर ली जाती है तब इस प्रक्रिया को बात कट्टी कहा जाता है।

3 **विवाह** :विवाह रस्म के अंतर्गत लड़की को विवाह के लिए लड़के के यहां एक दिन के लिए भेजा जाता है लड़की का भाई या उसका पिता उसको भेजने जाता है और लड़की एक दिन अपने पति के साथ रहकर दूसरे दिन अपने घर लौट आती है।

4 **चाला** : चाला विवाहित लड़की का पति तीन या चार माह बाद अपनी पत्नी को अपने घर ले जाने आता है, और लड़की स्थाई रूप से अपने पति के घर रहने के लिए चली जाती है इसी रस में कुछ चाला रस्म कहा जाता है।

<u>थारू जनजाति की आर्थिक जीवन</u>

(Economic life of Tharu Tribe)

थारूओ का मुख्य व्यवसाय व आय का स्रोत कृषि है। यह मुख्यताया धान की खेती के साथ-साथ दलहन, तिलहन तथा गेहूं आदि की कृषि करते हैं।तराई क्षेत्र होने के कारण वहां की भूमि उपजाऊ होती है,लेकिन उसके अनुपात में उपज अत्यधिक कम है। इसका एक प्रमुख कारण प्राचीन कृषि यंत्र व प्रविधियां भी है। फसल के बोने से लेकर बाजार में बेचने तक के सभी रूप परंपरागत है। फलस्वरुप थारूओ की कृषि से प्राप्त आय उनके जीवित रखने भर के लिए ही पर्याप्त होता है।

इसके अतिरिक्त मछली पकड़ना इनका दूसरा आवश्यक कार्य है।ये इनका व्यवसाय तो नहीं है परंतु पारिवारिक व्यय को कम करने में अत्यधिक सहायक है।स्त्री और पुरुष मछलियों का को पड़कर अलग-अलग करते हैं और अलग-अलग टोकरियों में रखते हैं क्योंकि अधिकतर स्त्रियां अपने द्वारा ही मारी गई मछलियों को खाती है इसलिए यह केवल उतनी ही मछलियां मारते हैं जितना कि वह उपभोग कर सके। जंगली प्रदेशों से लगे हुए होने के कारण यह जानवरों का भी शिकार करते हैं।जैसे- पाड़ा, शीतल, शेर सुअर व इसी प्रकार दूसरे जंगली जानवर का भी शिकार करते हैं।

थारू बाँस की डालियां, बाँस एवं मुज से बनी हुई वस्तुओं को बाजार में विक्रय करते हैं, जिससे उनकी आमदनी होती है।

हालांकि आधुनिक समय में शिक्षा के प्रसार के कारण एवं शिक्षित होने के कारण ये सेवा क्षेत्र ,कुटीर उद्योग एवं पशुपालन से भी अपनी आय बढ़ा रहे हैं, लेकिन दूसरी तरफ अत्यधिक निर्धनता, शराब का अत्यधिक सेवन, सामाजिक उत्सव एवं कन्या मूल्य पर किए गए व्यय भी इनकी आय को समाप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

इस प्रकार थारू जनजाति जो की मातृसत्तात्मक समाज होने का पुष्टि करता है। ये जनजाति अपने को महाराणा प्रताप का वंशज कहते है, लेकिन अभी भी पूर्ण सक्ष्यो का अभाव पाया जाता है।ये जनजाति तराई प्रदेशों में पाई जाती है। वर्तमान समय में नगरीकरण, औद्योगिकरण,आधुनिकीकरण तथा आर्थिक विकास की प्रक्रिया ने ग्रामीण परिवार की संरचना तथा प्रकार्य को निश्चित रूप से प्रभावित किया है। ग्रामीण समाजों के विकास के लिए सरकार द्वारा कई विकासात्मक कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं, जिससे समाज के आर्थिक स्थिति को मजबूती प्राप्त हो और बेहतर स्वास्थ्य एवं शिक्षा के लिए सरकार द्वारा योजनाएं बनाई दी गई है। कृषि को उन्नत बनाने के लिए सरकार ने किसानों को कृषि ऋण की व्यवस्था की है,जिससे ये लाभान्वित हो रहे हैं। शिक्षा के कारण इनका सहयोग सेवा क्षेत्र में भी मिल रहा है। निष्कर्षत: आज थारू जनजातिओं की दशा एवं दिशा दोनों स्तरों पर विकास दृष्टिगत हो रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डा॰ डी॰ एन मजूमदार भारतीय संस्कृति के उपादान/पृष्ठ संख्या 42

2 डा॰त्रिलोचन पांडेय, कुमाऊं का लोक साहित्य पृष्ठ संख्या 66

3 हसन आमिर उत्तर प्रदेश की जनजातियां उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र इलाहाबाद 1989 पृष्ठ संख्या 75 ,76

4। डाक्टर शंभूशरण अमीत/ थारू लोकगीत-संस्कृति एवं सामाजिक संदर्भ/ मंजूश्री प्रकाशन पीलीभीत/ 2010 पृ॰ सं॰ 12, 13, 14

5 प्रतियोगिता दर्पण/अप्रैल- 2009/ पृष्ठ संख्या 1613

6 श्री राजीव लोचन शर्मा जनजातीय जीवन और संस्कृति पृष्ठ संख्या 238

7 हसन आमिर मीट दी यू॰ पी॰ ट्राईवेस दी एकेडमिक प्रेस, गुड़गांव (हरियाणा)1982

8 मजूमदार डी॰ एन॰ रेसेस एंड कल्चर कल्चर ऑफ़ इंडिया एशिया पब्लिशिंग हाउस, न्यू दिल्ली 1958 पृष्ठ 88

9 बिल्तु ई॰ए॰एच॰दी कास्ट सिस्टम ऑफ़ नार्थन इंडिया लंदन 1931

10 डॉ॰ माजूमदार डी॰ एन॰सम एक्सेप्ट्स ऑफ़ द इकोनॉमी लाइफ ऑफ़ द बोक्सा एन्ड थारू ऑफ़ नैनीताल तराई जुलाई वॉल्यूम ऑफ़ दी एंथ्रोपोलॉजीकल सोसाइटी आफ बॉम्बे 1937

11 थारू लोकगीत/ सामाजिक एवं सांस्कृतिक/डॉ॰शंभू शरण शुक्ला अभीत/ पृष्ठ संख्या- 18

12 ग्रंथ अकादमी लखनऊ/ 1976

13 भारतीय सामाजिक संस्थाएं/ जी॰ के॰अग्रवाल/ एस॰बी॰पी॰डी॰ पब्लिकेशंस 2008

14 रविंद्र नाथ मुखर्जी/ सामाजिक मानवशास्त्र की रूपरेखा/विवेक प्रकाशन दिल्ली 2007/ पृष्ठ संख्या 377 - 382

15 जोशी घनश्याम (2003) उत्तराखंड का राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, प्रकाश बुक डिपो, बरेली पृष्ठ 171- 172

16 भारत ज्ञान कोश खंड-2/ इंदु रामचंदानी/एक्साइक्लोपेडिया ब्रिटानिका (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड,नई दिल्ली